# पात्र-परिचय

## पुरुष

| | | |
|---|---|---|
| १ | सूत्रधार | नट, नाटकक निर्देशक। |
| २ | कंसासुर | दैत्य, मथुराक राजा। |
| ३ | दौवारिक | कंसक द्वारपाल, प्रतीहार। |
| ४ | आत्रेय | नारद मुनि। |
| ५ | वसुदेव | श्रीकृष्णक पिता। |
| ६ | श्रीकृष्ण | परमेश्वर, वसुदेवक पुत्र। |
| ७ | नर्त्तकगण | नटुआ सभ। |

## स्त्री

| | | |
|---|---|---|
| १ | नटी | सूत्रधारक पत्नी।' |
| २ | देवकी | श्रीकृष्णक माए, कंसक बहिनि। |

सुकवि श्रीकान्त विरचित

# ॥श्रीकृष्णजन्म - रहस्य - नाटकम्॥

सुरेन्द्ररक्षणादिदक्ष-खण्डितारिपक्ष-लक्ष-
[1]रक्षित-स्वभक्त-पक्ष बाहुवल्लि-धारिणी ।
हरार्धदेहधारिणी सुभक्त-भव्यकारिणी
मुनीन्द्रवन्दतारिणी सदा तनोतु वो मुदम् ॥१॥

([2]तत्रैवार्थे कृष्णयति । मालवरागे गीतम्—१)

जय जय भगवति जय[3] भवसारम् ।
तव[4] पदमेव भजाम उदारम् ॥
करतल—कृत-करवाल—विशाले ।
नव - शशि - भूषित सुललित भाले ॥
समर शमित रिपु निकर कराले ।
पण्ड-मुण्ड खण्डित[5]—जयमाले ॥

---

श्रीकृष्णजन्मरहस्यनाटकक व्याख्या

देवराजक रक्षाकरबा मे अत्यन्त पटु, लाखो खण्डक सैन्यके कटबा मे ओ लाखो अपन भक्तगणक रक्षाकरबा मे सिद्ध बाहुरूपी लत्तीके धारण कएनिहारि, महादेवक आधादेह के धारण कएनिहारि, सुन्दर भक्तक कल्याण कएनिहारि, मुनिराज लोकनिक कृतकृत्य करएवाली भगवती सतत अहाँमभक आनन्द के बढ़ावथु ॥१॥

(ओहो अर्थके पुष्ट करैत छथि । मालवरागमे गीत—१)

हे भगवती ! अहाँक जय हो । अहाँक पएर जे संसारक सारस्वरूप(तत्त्व) थिक ओ उदार अछि तकर हमरालोकनि भजन करैत छी । जहाँ हाथ मे

---

१—रक्षितस्वभक्त । २—तत्रैवार्थे कृष्णयति । ३—जय जगदम्बे । ४—तव पद मोर परम हित अम्बे । ५—खण्डन ।

भुजग विभूषित लोहित—वसने ।
विकट-दशन लम्बित-वर-रसने ॥
सजल-जलद इव पूरित-तारे ।
वहसि कलित शत मणिमय हारे ॥
सुकवि गणक इह गायति गीतम् ।
सब चरणे मानसमुपनीतम् ॥

(अपि च श्लोकः)—

विघ्नध्वान्ताऽतिगाढ़प्रहरणविषये चण्डमार्तण्डखण्डः
[६]प्रोद्भूतानघबोध-प्रचरणहनने दारुणो दाववह्निः ।
स्वर्गाधीशाद्यधाम-प्रणमितचरणः [७]शैवकाब्धिहंसः
स्फूर्जच्चन्द्रावतंसः [८]स्वनयतु कुशलं विघ्नराजो गणेशः ॥२॥

---

विशाल तरुआरि रखने छी। अहाँक कपार पर सुन्दर नवीन चन्द्रमा छथि। मुख से अहाँ भयानक शत्रु के समूह के शान्त करैत छी, चण्ड ओ मुण्डके काटि विजयक माला पहिरने छी, साँप सँ शोभित लाल वस्त्र पहिरने छी, विकराल दाँत ओ लमड़ल ओहू अछि, पानिभरल मेघ मे तारा सभ जेना भरल रहय तहिना सैयो मणिक हार के धारण कएने छी। सुकवि गणक (ज्योतिषी कवि लाल) एहि गीतके गबैत छथि ओ अपन मन के अहाँक चरण पर समर्पित कएने छथि ॥

(आओरो श्लोक)—

विघ्नरूपी गहन अन्धार के मारबा मे प्रचण्ड सूर्यमण्डल, उत्पन्न भेल पापक समूहक गहन प्रचार मे दारुण दावानल (वनक अग्नि), स्वर्गक राजा इन्द्र ओ विष्णु सँ पूजित चरणवला, शिवक वंश रूपी समुद्र मे हंसक समान, चमकैत चन्द्रमाक गहनावला विघ्नक अधिपति गणेश कुशलदायक शब्द करथु ॥२॥

---

६—प्रोद्भूतप्रबलोपद्रवगहने दावाग्निवद्दारुणः । ७—सौरभ साब्धिहंसः (?)।
८—सुनयतु ।



(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण ! (परितोऽवलोक्य) अहो ! महद्विलक्षणा रङ्ग-भूमिकाऽवलोक्यते । (पुनः स्तौति ।):—

महाप्रतापशालिनी नृपाधिपालिपालिनी
स्फुरद्गुणानुरागिका[९], विभाति रङ्गभूमिका ।
प्रिये ! विधेहि सादरं, तदत्र कौतुकं परं
महीप-कंस शासिता, सभा मुदेन शासिता ॥३॥

(ततः प्रविश्य नटी वदति ।)

नटी—वन्दामि अज्जउत्तं[१०] । अज्जउत्त ! एसा संवित्ता [११]आअदह्मि । मआणवेदि अज्जो । [वन्दे आर्यपुत्रम् । आर्यपुत्र ! एषा संवृत्ता आगताऽस्मि । मयाज्ञापयति आर्यः ।]

सू०—प्रिये ! एषा कंसमहाराजस्य महती सभा । अत्र निजगुणान् सन्दर्शय । [१२]अष्टपात्र - प्रवेशकेन नृत्येन राजानमनुरञ्जय—

---

(नान्दीपद्यक बाद)

सूत्र०—विशेष विस्तार उचित नहि । (चारूकर देखि) अहो ! अत्यन्त विलक्षण रङ्गमञ्च देखि पड़ैछ । (फेर स्तुति करैत छथि)—

महान् प्रताप सँ युक्त, राजाधिराजक द्वारा सम्पोषित, प्रकाशित गुणक अनुराग भरल ई नाट्यपरिषद् शोभित भए रहल अछि । तेँ हे प्रिये! एतए आदरपूर्वक अत्यन्त रोचक अभिनय प्रस्तुत करू, किएक तेँ ई राजा कंसक द्वारा शासित सभा आनन्द सँ परिपूर्ण अछि ।)

(तखन प्रवेश कए नटी बजैत छथि ।)

नटी—आर्यपुत्र केँ प्रणाम करैत छी । आर्यपुत्र ! हमेहु तैयार भए आएलि छी । जे आर्यक आज्ञा हो ।

सूत्र०—प्रिये ! ई कंसमहाराजक पैघ सभा थिक । एतय अपन गुणसभकेँ प्रदर्शित करू । आठ पात्रक प्रवेश वला नृत्य सँ राजाकेँ प्रसन्न करू:—

---

९—गुणान्वरागिका । १०—भत्त ! । ११ - आअदह्मिम्ह आणवेति । १२-भट्टो ।

(दोहा)—

हमे[१३] नट मारिष, तूँ नटी, ऋषि नारद, कंस भूप ।
वसुदेव देवकि, भरतमन, मोहन ब्रह्मसरूप ॥१॥

(ततो नटी नेपथ्ये उदाहृत्य मङ्गल-पदा-योजितं[१४] गीतं गायति ।)

(नान्दी आसावरी-रागे [गीतसं०—२]

जय [जय मङ्गल] देवु विघनेसे ।
करिवर मुख दुख हरय गणेसे ॥
आपद - तिमिर तरनि - अवतारे ।
[१५]पातक गहन दहन अन्धकारे ॥
विघन पुदिस जनि मारुत लोले ।
गलित सदस मद ललित कपोले ॥
सुरनायक - मुनि - सेवक चरने ।
निज - गन - जन मन [१६]कालुष हरने ॥

---

हम अभिनेता सूत्रधार रहब, अहाँ नटी, नारद मुनि, राजा कंस, वसुदेव देवकी, नर्त्तक सभ ओ ब्रह्मस्वरूप श्रीकृष्ण ॥१॥

(तखन नटी नेपथ्य मे जैसि सभ मङ्गल पद सँ युक्त गीत गबैत छथि)—

(नान्दी आसावरी रागमे गीतसं०—२)

विघनेसे = विघ्नक राजा गणेश । करिवरमुख = हाथीक मुँह वला । आपद ..... = विपत्तिरूपी अन्धकारक हेतु सूर्यक अवतार । पातक ..... = गहन पापक हेतु आगि । विघन = विघ्न वा विशिष्ट घन (मेघ) । मारुत लोले = चञ्चल वायु (विघ्नस्वरूप मेघ केँ छिअएबा मे) । गलित ..... = गलित सदस मद (हाथीक मद्दी) सँ शोभित गालवला । सुरनायक ..... = इन्द्र ओ मुनिगण चरणक सेवक छथि। निज ..... = अपन भक्त सभक मनक दुःख हरण करैत छथि ॥

---

१३ - हमों ।

१४ - पदमायोजितं । १५—पातु जगहनदहन । १६—कलुष ।



बुझि त्रिभुवनपति हम तुअ दासे ।
अनुपल पूरिअ अभिमत आसे ॥
सुनवि बचक मन सुनि उपदेसे
सकल सभा शुभ करथ गणेसे ॥

कंसासुर—: (आकर्ण्य) अहो ! महद्गुणवाणीव लक्ष्यते ।

(इति श्रुत्वा उपसृत्य नर्त्तकाः कथयन्ति ।)

नर्त्तकाः—[१७]जय महाभाग महाराज ।

कंसासुरः—विलासहितं नृत्यं कुरु ।

(नर्त्तक्यस्तथा कुर्वन्ति ।)

(काचित् प्रफुल्लारविन्दवदना कमपि मनोहरं निजभुजमुखं दाशमी-मुखवती इदानीं नाऽङ्गीकरोति । तत्र काचि सखी तां मधुकर-मालती-व्याजेन कथयति )

(श्लोकः)—

---

१७ - जयमाग (?) ।

सो पीत मधुपेन पङ्कजदले, नो वा कदम्बद्रुमे
[१८]मारन्दं न दृशापि वीक्षितमथ प्रौढाभिमाने सति ।
स्वामेकं बहुचिन्तयन्नुपगतस्तन्नैव चेत् तोष्यसे
कोऽन्यस्तस्य मधुव्रतस्य शरणं, कस्त्वद्गुणग्राहकः ॥४॥

(श्लोकार्थे गीतम्--३)

मधुकरमनुनय [१९]मालति ! मनसिज-सुखमपहाय[२०] ।
गायति सब गुण-गौरवमनुपलभ्यखिलमूलाय[२१] ॥
अवधारय मधुपञ्चलमतनु - मानहृदयेन ।
व्रज मधुसूदनमपि खलु, विरहिण मह[२२] सरसेन ॥
अधिकरसगरिमवाहिनि ! सकल-कला-चतुरेषु ।
[२३]गुणवति ! भज भवभूषणमधिकारं[२४] भ्रमरेषु ॥

भौंरा, ने कमलक पत्ती पर आ ने कदम्बक गाछे पर पराग पिअलक, ने फूलक रस कें आँखियो सँ देखलक। सटकट अभिलाषा भेला पर केवल तोहरहि बहुतप्रकारें चिन्तन करैत अएलहु अछि। हे मालती ! ओकरा जें सन्तुष्ट लाह करैत छह तें ओ मधुव्रत भौंराक आन के कारण होयतैक आ तोहरो गुणक ग्रहण करनिहार दोसर के होएतह ? ॥४॥

(श्लोकक अर्थ मे गीत—३)

हे मालती ! तों कामसुख कें छोड़ि भौंराकें मनावह । ओ हरदम तोहर गुण तथा गौरवके सकल सुखक हेतु गबैत छह। अपन देहक मान सँ रहित हृदय सँ ओहि मधुक प्रति चञ्चल भौंरा कें चिन्हह। एतय ओहि विरही मधुसूदनक लग सरसता सँ जाह। हे अधिक रस देबवाली ! सकल कलामे चतुर भ्रमरसभ मे विकार रहित तोहर वशीभूत जे तोहर ई संसारक

१८ - आस्वदन । १९ - भजु भ्रम । २० - हाए । २१ - आए ।
२२ - विरहिभिमिह । २३ - गुणमति भजु । २४ - सविकारभ्रमरेषु ।



[२५]आलोक्य तिलकालिनि ! सपदि सदा नयनेन ।
[२६]स्वहृदि निधाय समागममनुसर तं सुनयनेन ॥
कुरु विकसितमतिसुन्दरमाननमधिकसुहेन ।
भवति विलासिनि ! हितमिह मणक-स्खलित-वचनेन ॥

कमासुरः—(विहस्य शिरःकम्पं विधाय) साधु, साधु !!
(इत्यङ्कगुरीयकं तर्कायं ददाति ।)
(तर्कः सादरं गृह्णाति गृहीत्वा च प्रचलितः ।)
(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)
[इति प्रस्तावना]
(अथान्तरे प्रविशति धात्रेयः)

(देशीयरागे गीतम्--४)

अएलहुँ देवसमाज सँ आज ।
कंस महीपति मीलन काज ॥

भूषणस्वरूप भ्रमर तकर समीप हे गुणवती ! तों जाह। हे तिलवाली ! झटदए अपना हृदयमे ओकरा राखि अपना आँखि सँ देखह ओ ओकरा सङ्ग समागम ओ मनक हेतु जाह। अत्यन्त सुन्दर अपन मुँह कें सुख सँ विकसित करह। हे विलासिनी ! सुकवि मणकक सुन्दर एहि वचन सँ एतए हित होइत छैक ॥

कमासुर—(हँसि मूड़ी झुकाए) वाह ! वाह !! (नटुआकें औंठी देत छथि ।)
(नटुआ आदरपूर्वक लैत अछि आ लए विदाभए गेल ।)
(सभ बहार भए गेल ।)
[इति प्रस्तावना]
(एही बीच नारद प्रवेश करैत छथि ।)
(देशी राग मे गीत—४)

सुनयन = उज्जवल । उदर = पेट मे । वन्द = वन्दना करैछ । विहिक……

२५ - आलोकयति तालिनि २६ - सुहृदि ।

धवल केश भ्रूकारल गात ।
उदर नदीक सूनल बात ।
नगर डगड़ जे जन डाह ।
ता सभों उपज थेम अपार ॥
तीनहुँ भुवन के नहि बन्द ।
विहिक कुल-पयोनिधि-चन्द ॥
नारद सभ कला विसराम ।
भनए गणक गुणक धाम ॥

दौवारिकः—(प्रविश्य[२७])कः कोऽत्र ? (परिक्रम्य) को भवान् ?
धात्रेयः—रे मूढ़ दौवारिक ! न मां जानासि ? अहं ब्रह्मर्षि नारदः ।
दौवारिकः—(ससम्भ्रमम्) भगवन् ! नमो दे । [भगवन् ! नमस्ते ।]
धात्रेयः—[२८]तथास्तदृशफलमस्तु । (हस्तपुस्तका प्रचलितः । [२९]कंसासुराय दत्तं
आशीर्वादं पठेन)—

जटाजूट-मध्ये लसद्देवधारा
[३०]स्फुरद्रेमरणा च मुक्तानुकारा ।

---

= विधाताक कुलरूपी समुद्र सं उत्पन्न चन्द्रमा थिकहुँ । कला विसराम = सम कलाक निवासस्थान ॥

द्वारपाल—(प्रवेशकए) एतए के के अछि ? (टहलि) अपने के थिकहुँ ?
नारद—रे मूर्ख द्वारपाल ! हमरा नहि जनैत छे ? हम ब्रह्मर्षि नारद थिकहुँ ।
द्वार०—(हड़बड़ाए) भगवन् ! अहाँके प्रणाम करैत छी ।
नारद—तोहरा अनुरूप फल होअओ । (ई कहि चलि देलनि । कंसासुरके
देल आशीर्वाद पाठक द्वारा)—

महादेवक जटाजूटक बीच मे शोभित गङ्गा, चमकैत सोनाक समान
तथा मोतीक समान (चन्द्रकला), अङ्ग मे निवास करैत उद्देश्यपूर्वक

---

२७ = परिक्रम्य (आगू-'परिक्रम्य'क स्थान मे प्रविश्य' ।)
२८ = तथास्तदृशा । २९ = कंसा-सुरं । ३० = स्फुरद्रेमरणाश्च ।



[३१]भवानीयमुद्दिश्य चाङ्गे वसन्ती
सदा पातु शम्भोः कृपायुक्तदृष्टिः ॥५॥

कंसासुरः—(ससम्भ्रमम् अर्घं पादार्घं च कृत्वा[३२]) मुने ! स्वागतं भवतः ।
धात्रेयः—साम्प्रतं भवदालोकनेन,

अदभुद एक सुनल हमे अवसर, मन भेल परम विरामे ।
देवकि-तनय तह कंस महीपति ! मन्द ! तोहर परिनामे ॥२॥

कंसासुरः—(सविस्मयम्) मुने ! तर्हि किं कर्त्तव्यम् ?
धात्रेयः—

सावधान भए रहिअ से निक थिक, एखनहि करिअ उपाए ।
नहि तञो फेरि पुनु, परत नृपति सुनु, गरुअ पराभव आए ॥३॥

कंसासुरः—(स्वगतम्) सम्यगेवोच्यते । भद्रम् एतस्य प्रकारं करिष्यामि अहम् ।
धात्रेयः—(पुनः कथयति)—

---

ई भवानी ओ कृपासं युक्त दृष्टि सतत रक्षा करओ ॥५॥

कंसासुर—(हड़बड़ाए मुँह धोबाक जल ओ पएर धोबाक जल उपस्थित करैत)
मुने ! अहाँक स्वागत करैत छी ।

नारद—एखन अहाँके देखला सं,

कोनो अवसर पर हम एक अद्भुत घनटा सुनल जाहि सं मन
स्तब्ध रहि गेल । हे मूर्ख कंस देवकीक बेटा सं तोहर अन्त होएतहु ॥२

कंसासुर—(चकित होइत) मुने ! तखन की करबाक चाही ?

नारद—सावधान रहबे नीक, एखनहि प्रतीकार करू । नहि तं बाद मे बड़
पैघ (गरुअ) दुःख आबि खसत ॥३॥

कंसासुर—(मनहि मन) ठीके कहैत छथि । नीक जकाँ एकर हम प्रतीकार
करब ।

---

३१ = भवानी (सीत ?) मुद्दिश्य । ३२ = कृत्वा प्रोक्तं च ।

सबतह बड़ धिक पिअ [निअ] जीवन, ताहि करिअ अनुमान ।
दिढ़ भए दए मन, करब तोहर[जत] मन भल देख निदान ॥४॥

कंसासुरः—एवम् । अत्र कः सन्देहः ?

नारद-वचन चिन्ति[३३] निअ मानस, कंस कहल इह बात ।
जे जे अपत होएत देवकि कां, तकर करब हमे घात ॥५॥

धात्रेयः—(साट्टहासम्) मदभिलषितमेवोक्तम् । अवश्यं तत् कर्त्तव्यम् । (इति निष्क्रान्तः ।)

कंसासुरः—([३४]सविस्मयमन्तःपुरमागत्य मनस्येव विचार्य झटिति बहिर्भूत्वा प्रतीहारान् आहूय आज्ञापयति) भोः प्रतीहार! देवकी-वसुदेवौ कारागारं नीत्वा सम्यक्तया रक्षणीयौ ।

प्रतीहारः—[३५]जं देओ आणवेदि । [यद्देव आज्ञापयति ।] (इति निष्क्रम्य प्रचलितः ।)

---

नारद—(फेर कहैत छथि)—सबसं पेंच अपन जीवन धिक, तकर विचार करू तें स्थिर भए मन दए अपन परिचारक सभ कें सतर्क करू, जाहिसं उचित प्रतीकार भए सकए ॥४॥

कंसासुर—बेस । एहि मे कोन सन्देह ?
नारदक वचन कें अपना मन मे विचारि कंस कहलनि जे देवकीकें जे जे सन्तान होएतनि तकरा हम मारि देब ॥५॥

नारद—(ठहाका मारि) हमर इच्छा जएह छल सएह कहलहुँ अछि । अवश्य से करू (बहार भेलाह )

कंसासुर—(विस्मय करैत अपन ड्योढ़ी आबि मनहि मन विचारि झट दए बाहर भए द्वारपालसभ कें बजाए आज्ञा देत छथि) हओ द्वारपाल! देवकी ओ वसुदेव कें जहल लय जाए नीक जकाँ राखह ।

द्वारपाल—जे सरकार आज्ञा देथि । (बहार भए चल गेल ।)

---

३३ = चिन्तयित्वा मानसे । ३४ = सविस्मयमन्तःपुरमागत्य मनस्येवार्थं झटिति ।



(एतच्छ्रुत्वा देवकी निःश्वस्य कथयति ।)

(करुणा-मालव-रागे गीतम्—५)

[३६]भाइ ! कह कि कएल हमे तोर ॥ध्रुवम्॥
तात-मातु मोहि, सोपि देलक तोहि,
पिशुन-वचन होअ भोर ।
एत दिन एह छल, तोहइँ करह भल,
करुणा तेजलह मोर ॥
धिकहुँ [३७]होदर, तेहु दया कर,
किए बाँधि देल बनिसार ।
तोहर बहिनि भए, ओतहि रहब गए,
एकरो करह विचार ॥
हित अनहित भेल, कुजन कुमति देल,
[३८]दु मुतक दिन भेल काम ।
विहिक लिखल जे, अवस होएत से,
रहत कथा परिनाम ॥
जाहिसह दस हंस, से किए करह कंस,
मोहि नहि सहि दुखभार ।
सुकवि गणक भन, धर धैरज मन,
सहनहि तह परकार ॥

---

(ई सुनि देवकी निःश्वास लए कहैत छथि ।)

(करुणा मालव रागमे गीत—५)

तात मातु = बाप माए । सोपि = समर्पित । पिशुन वचन = दुर्जनक वचन सं । भोर = अज्ञानी । भल = तोंही हित करैत छलह । करुणा = दया । बनिसार = बन्दीशाला, जेल । हित अनहित = जे हित छल जे हित भए गेल । कुजन = दुर्जन । काम = विपरीत । विहिक = विधाताक । अवस = अवश्य । कथा = दुर्यशक अपवाद । जाहिसह = जाहि सं । सहनहि तह = सहले सं ॥

---

३६ = भाइ कह कह कि कंस मे तोर । ३७ = ई बुझल । ३८ = वसुदेव-देवक्या सम्बन्धवाली ।

कंसासुरः—(सक्रोधम्) रे मूढ़ प्रतीहार ! सत्वरं गच्छ ।

(ततः प्रतीहारः सकरुणं वसुदेव-देवकीभ्यां[३८] समं शासनशालां प्रति गमनं चकार ।)

इति श्रीश्रीकान्त- विरचितो देवक्याः कंसजनित- विस्मयो नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

# अथ द्वितीयोऽङ्कः

(प्रस्तावना)

(पुनर्नेपथ्ये षड्गर्भ-संख्यं यतहृदया देवकी प्रविश्य निःश्वस्य कथयति)—

(गौडीमालवरागे गीतम्—६)

वसुदेव-देवकी देल परवेस ।
निअर सिअर विभु दुसह कलेस ॥

---

कंसासुर—(क्रोधपूर्वक) रे मूर्ख द्वारपाल ! जल्दी जो ।

(तखन द्वारपाल दुःखपूर्वक वसुदेव औ देवकीक संग जेल दिस दिशा भेल ।)

इति 'श्रीकान्त'क बनाओल श्रीकृष्णजन्मरहस्यमे 'देवकीक कंसक द्वारा आश्वासित होएब' नामक पहिल अङ्क समाप्त भेल ॥

## द्वितीय अङ्क

(प्रस्तावना)

(फेर नेपथ्य मे छओ गर्भ सं पीड़ित हृदयवाली देवकी प्रवेश कए निःश्वास लए कहैत छथि)—

(गौड़ी-मालवरागमे गीत—६)

निअर=निगड़ (हथकड़ी) । सिअर= ... ...(अस्पष्ट) । विभु=



निअगन आएब अवचि परान ।
अचिर न एहि नओ देखिअ तरान ॥
प्रसव-वेदन सहि होइअ हरान ।
निकरुन निअ नहि धएल धेआन ॥
सञ्चिअ गर्भ कएल कत आस ।
उतपति कालहि कएल निरास ॥
सुकवि 'भणक गन हए एहो भान ।
नारद-वचन करिअ अनुमान ॥

(पार्श्वश. पुनरागत्य प्रवेशं नाटयति ।)

पार्श्वश.—(परिक्रम्याश्रुलोचनं च) अहो ! शिव शिव !! कथमियमवस्था ?

देवकी—(ससम्भ्रमं प्रणिपत्य गीतेन कथयति )

(करुणा मालव-रागे गीतम्—७)

सुनि हे ! कि हमे करब परकारे ।
चिन्ता-जलधि मगन मोर मानस,
कओन परि होएत सँतारे[३९] ॥

---

विधान । कलेस=दुःख । निअगन=निगड़ (हथकड़ी) । अचिर=जल्दी । तरान=रक्षा । निकरुन=निर्दय (कंस) । सञ्चिअ=संचित कए, पोसि । उतपति=जन्म ॥

(नारद फेर आबि प्रवेशक अभिनय करैत छथि ।)

नारद—(देखि ओ देखि) अहो ! हाय हाय !! कोना एहन दशा भए गेल ?

देवकी—(हड़बड़ाए प्रणामक हेतु सखि गोलद्वारा कहैत छथि)—

(करुणा मालवराग मे गीत—७)

परकारे=उपाय । चिन्ता-जलधि=चिन्तारूपी समुद्र मे हमर मन डूबल

---

३९ - संतारे ।

जुग सम जामिनि कठिन गमाबिअ,
के जन कएल कत पापे ।
एहनि करमहिनि, हमे सनि के धनि,
जे अह एतेअ सन्तापे ॥
तोहें नारद मुनि, हमे निरदिस गुनि,
कहिअ तेहन उपदेशे ।
जाहि तह सँतरिअ अचिर दुगह दुख,
न रहु कलेसक लेसे ॥
दूषन जोनु हमरि एहु दुर्गति,
कतेक सहब दुखभारे ।
[४०]तनय-हरन तह मरन नीक थिक,
[४१]इह बुझि करिअ परकारे ॥
सुकवि भणक भन, धर धैरज मन,
सब दिन न रहु समाने ।
नारद-वचन धरिअ गुन-भाजन,
जे भल देखत निदाने ॥

धात्रेयः—देवकि ! या सीद । महान् उपायोऽस्ति । तच्छृणु—

अछि । सँतारे = उद्धार । जामिनि = रात्रि । के जन = गर्भ मे कोन पापी व्यक्ति अछि । करमहिनि = अभागलि । निरदिस = असहाय । सँतरिअ = पार होइ । अचिर = जल्दी । कलेसक लेसे = दुःखक लेशो नहि रहए। दूषन जोनु = बिनु दोषें । तनय-हरन तह = पुत्रक हरण सँ । निदाने = उचित प्रतीकार ।।

नारद—देवकी ! दुख जनु करी । एकर पैघ उपाय अछि । से सुनु—

४० » तनय हरन त हमर न नीक थिक । ४१ - ई बुझि ।



कहल नारद देवकी सुनु, आन नहि परकार ओ ।
धरह दृढ़ हरिचरण सरण, सँतार तेहि दुखभार ओ ॥६॥

(इत्युक्त्वा प्रचलितः ।)

(प्रस्तावना समाप्त)

(ततो वसुदेवो देवकी च हृदि विमृश्य हरिचिन्तने चित्तं निवेश्य गीतेन कथयतः[४२] ।)

(आसावरी-रागे गीतम्—८)

मन अनुचिन्त देवकि वसुदेव ।
दुहतर भगति दामोदर सेव ॥
दुख सागर सँ करिअ उद्धार ।
तोहें सब जगतक कल्योग कण्डहार ॥
परल पराभव रचिअ उपाए ।
चिन्तामनि अनुगत चित लाए ॥
करुणामय जनु होइअ भोर ।
सब तेजि सरण धएक हमे तोर ॥
जाहिक-हरन सहल नहि जाए ।
देखि दुख दरबरि होइअ सहाए ॥

हे देवकी ! दोसर उपाय नहि अछि । अहाँ कृष्णक चरणकें कहिकए गह, जे दुःखक भार सँ पार करत ॥६॥

(ई कहि चलि देलनि ।)

[प्रस्तावना समाप्त]

(तखन वसुदेव ओ देवकी मन मे विचारि श्रीकृष्णक चिन्तन मे मनकें लगाए गीतक द्वारा कहैत छथि)—

(आसावरी-रागमे गीत—८)

अनुचिन्त = ध्यान करैत छथि । दुहतर = अधिक निश्चितरूपें । दामोदर = कृष्णक । कण्डहार = कर्णधार, खेवैया । पराभव = दुःख में । चिन्ता-

४२ - कथयति ।

सुकवि गमक मन दए एहो गाव।
भगति जगत गति के नहि पाव ॥

(ततः श्रीकृष्णः वाहनया गरुडस्थः समागतः।)

(देशाख-रागे गीतम्--६)

देल गरुडासन प्रभु परवेसे ।
अभय भगत—जन सुनि कलेसे ॥
पीत बसन तनु उपज सिनेहे ।
सजल जलद जनि दामिनि रेहे ॥
करतल बाम एहन मन भाये ।
पङ्कज पर इन्दु कएल निवासे ॥
पदम पानि देखि होअ मन भाने ।
पङ्कज सँ पङ्कज निरमान ॥
सुकवि गमक नहि संशय आने ।
हिनि तह अविरहि होएत तराने ॥

(ततो देवकी गाखमवलोक्य प्रदक्षिणं कृत्वा प्रोक्तवती ।)

देवकी—भो ! त्रैलोक्यनाथ ! मयि[४३] प्रसीद । तान्यः प्रकारः ।

---

भगति = चिन्ता सँ भरल । अनुगत = भरल । घोर = अन्धारी । जातकहरन = पुत्रक हरण । दरबरि = झटपट ॥

(तखन श्रीकृष्ण दयापूर्वक गरुड़ पर चढ़ल आबि गेलाह ।)

(देशाख-राग मे गीत—६)

गरुडासन = कृष्ण । पीत बसन = पीयर वस्त्र । सजल ..... = पानि सँ भरल मेघ मे जेना बिजलीक रेखा रहए । इन्दु = चन्द्रमा । पदम = कमल । पानि = हाथ मे । पङ्कज = कमल सँ कमल बहराइत हो । हिनि तह = हिनकाहि सँ । अविरहि = अविलम्ब । तराने = रक्षा ॥

(तखन देवकी कृष्णके देखि प्रदक्षिण कए कहलथिन)—

देवकी—हे त्रीलोकक मालिक ! हमरा पर प्रसन्न होउ । दोसर उपाय नहि अछि ।

---

४३—मां ।



(तेनाऽनन्तरं नारायणेनोक्तं पद्येन[४४] ।)

श्रीकृष्णः—

मातः ! खेदमपाकुरु प्रतिपलं मच्चिन्तने सादरं
चेतस्यां विनिवेशिहि शासनगृहे [४५]दोषास्त्वमङ्गीकुरु ।
[४६]यावत् त्वज्जठरे विशामि शनकैः प्रोद्भूय मन्दालयं
मीत्या तैश्च कथापरामि सहसा कंसाधमोत्सारणम् ॥६॥

(इति श्रुत्वा देवकी साश्रु कथयति ।)

देवकी—प्रभो ! मज्जठरे निवासं कदा करिष्यसि ?

श्रीकृष्णः—(विहस्य गद्येन) मातः ! तव गर्भेऽहं बलभद्रावतारोऽहमेव प्रथमं योगनिद्राव्यपदेशेन रोहिणी-गर्भमाविशन् सङ्कर्षणपदमाप्स्यामि[४७], ततोऽष्टमे गर्भे अहमप्यागमिष्यामीति । इति सत्यं जानीहि । चिन्तां दूरीकृत्य तावत् कारागारे वासमङ्गीकुरु ।(इति निष्क्रान्तः।)

(तच्छ्रुत्वा देवकी समुल्लसितहृदया तूष्णीं बभूव ।)

---

(तखन श्रीकृष्ण पद्यद्वारा कहलथिन ।)

श्रीकृष्ण—हे माए ! अहाँ दुख दूर करू, हरदम आदरपूर्वक हमर चिन्तन मे मनके लगाउ ओ एहि जहल मे राति सभ के बिताउ यावत् धरि हम अहाँक पेटमे पैसैत छी, उत्पन्न भए नन्दक घर जाए, कथन बिताए सहसा पापी कंसक नाश करैत छी ॥६॥

(ई सुनि देवकी आश्वस्त भए कहैत छथि ।)

देवकी—हे प्रभु ! अहाँ हमरा पेट मे कहिया निवास करब ?

श्रीकृष्ण—(हँसि गद्यक द्वारा) हे माए ! अहाँक गर्भ सँ बलभद्रक अवतार लए हमहीं पहिने योगनिद्राक व्याजे रोहिणीक गर्भ मे पैसि सङ्कर्षण कहाए, तखन आठम गर्भ मे स्वयं हम आएब ई सत्य जानू। चिन्ता दूर कए तावत् जहल मे वास करू । (यहाँ भए गेलाह ।)

(ई सुनि देवकी उल्लासयुक्त हृदय भए चुप भए गेलीह ।)

---

४४—पद्येन कथयति । ४५—दोषस्त्वं । ४६—त्वज्जठरे वा(?) विशामि । ४७—पदमाप्स्यामि ।

(अथ छन्दः)

भगति रति मति, कएल दृढ़ गति, हरिचरण परि आस ओ ।
लेल सारङ्गपानि मन गुनि, आए गर्भ निवास ओ ॥
४८छुटल चिन्ता छीन-तनुगत जुटल हृदय हुलास ओ ।
४९गर्भ समुचित भइए किछु दिन, पुरल पूरन मास ओ ॥७॥

(अथ गीतम्-- १०)

भगति कएल दृढ़ आने ।
मन बुझि गति नहि आने ॥
बाढ़ल मानस आसे ।
हरि लेल गर्भ-निवासे ॥
पसरल हृदय हुलासे ।
पूरल पूरन मासे ॥
नभस सुदीवस भेला ।
देवकि वेदन लेला ॥
सुकवि गणक इह भाने ।
तखनुक समय बखाने ॥

(छाद)

रति = अनुराग । दृढ़ गति = स्थिर रीति । सारंगपानि = श्रीकृष्ण । छीन-तनुगत = दुर्बल शरीर में स्थित । हुलास = उल्लास । पूरन = पूर्ण ॥७॥

(गीतार्थ—१०)

हरि = कृष्ण । पूरनमासे = पूर्णमास, दसम मास । नभस सुदीवस = बरसातक सुन्दर दिन । वेदन = प्रसववेदना ॥

४८—छुटल चिन छीन तनुगत । ४९—सगर्भ ।



(अथ प्रसवकाल-वर्णनम्)

निबिड़ नभ संघट्ट युत घन, घोर गरज सदर्प ओ ।
वलित दलित अँधार५० बहुदिस, तलित दर्पि तरप्प ओ ॥
झिङ्गुर झिल्ली रव विभीषम, अधिक दादुल सोर ओ ।
त्रास ५१तहु न घोर संचर, मोर सबद अनोर ओ ॥८॥

अथ गीतम्--११

नभ गरजए घन घोरे ।
मोरक सबद अनोरे ॥
रहनि महा भर भीमा ।
आदि अँधारक सीमा ॥
बरिसए बारिद धारा ।
एहि पूरित महि सारा ॥
भेक झिंगुर कर गाने ।
योगिनि—निकर भयाने ॥
सुकवि गणक इह गाई ।
एहि अवतरल कन्हाई ॥

(प्रसवकालक वर्णन)

निबिड़ = सघन । नभ = आकाश में । संघट्ट = टक्कर । घन = मेघ । घोर = अतिशय । सदर्प = दर्प सहित । वलित = सहित । दलित = पसरल । तलित = बिजलोका । रव = शब्द । विभीषम = भयानक । दादुल = बेङ । त्रास = डरे । मोर सब्द = मयूर बजैछ । अनोर = अनुपम ॥८॥

(गीत—११)

नभ = आकाश में । रहनि = राति । भीमा = भयानक । बारिद = मेघ । महिसारा = सम्पूर्ण पृथ्वी । भेक = बेङ । योगिनिनिकर = योगिनीक समूह ॥

५०—अँधकार

(अथोत्पत्तिकालवर्णनम्)

योग शोभन रोहिणीसुत, लग्न उत्तम कर्क ओ ।
[५१]ताहुँ सुरगुरु, स्वगृह शशधर, चारु दोसर अर्क ओ ॥
मास नभ—वसु तीथि अष्टमि, कृष्णपक्ष विशाल ओ ।
देवकी कौ तनय भए अवतरल श्रीगोपाल ओ ॥९॥

(अथ गीतम्— १२)

हरि हेरि दुख दुरि गेला ।
पुलकित मानस भेला ॥
[५२]फुजल बन्धन दृढ़ डोरे ।
मन्दिर भेल [५३]हुजोरे ॥
कर जोरि कहलन्हि जाई ।
समरिअ सदय मथाई ॥
जागि पाओल अओ तोही ।
धाओल अरि निरमोही ॥
करें गहि अङ्कम लेला ।
साहस परिनत भेला ॥
सुकवि गणक इह भाने ।
हिमि छाड़ि गति नहि आने ॥

---

(अथ उत्पत्तिकालक वर्णन)

शोभन = शोभन नामक योग। रोहिणी नक्षत्र सँ युक्त। सुरगुरु = बृहस्पति। स्वगृह = अपना घर मे (कुण्डली मे निर्धारित घर मे)। शशधर = चन्द्रमा। चारु = सुन्दर। अर्क = सूर्य। नभवसु = माधव ॥९॥

(गीत—१२)

हेरि = देखि। पुलकित = प्रसन्न। दृढ़ डोरे = मजबूत डोरी। मन्दिर = घर। समरिअ = समटू। मथाई = कृष्ण। अरि = शत्रु। करें = हाथ सँ। अङ्कम = कोरा मे। साहस = उत्साह ॥

---

५१—ताहुँ सुरगुरु, स्वगृह शशिधर। ५२—फूजल। ५३—झीजोरे।



श्रीकृष्ण (एतच्छ्रुत्वा स्वाभरणानि चकार।) प्रोक्तं च लभ्यते। मां नीत्वा नन्दालये संस्थाप्य, कन्यकां गृहीत्वा सानुसारमागच्छ।

(वसुदेवस्तथा करोति।)

धाए अरि हरि कएल कर पर, पुरल अधिक [५४]अलोध ओ ।
[५५]उपर अहिपति भोग पसरल, न होअ तनु जलजोग ओ ॥10॥

(अथ गीतम्— १३)

खुलल पाओल दुआरे ।
सएन सगन प्रतिहारे ॥
तपन—सुता भेलि पाछे ।
[५६]पसर गगन निरवाहे ॥
फले फले हरि धरि देला ।
तसु तनया गहि लेला ॥
[५७]कक्करहु नहि भेल जाने ।
वसुदेव कएल पयाने ॥

---

श्रीकृष्ण। हे पुत्रि अपन रूप समेटि लेलो जे हम कहने छलहु से आब अहाँ पाबि रहल छी। हमरा लए नन्दक घर मे राखि, ओतए सँ कन्या लए हमर कहलक अनुसारें आबि जाउ।

(वसुदेव तहिना करैत छथि।)

कृष्णक आज्ञा भेलाहि हाथ मे लए बिदा भेलाह, अत्यधिक मेघ उमड़ि आएल, ऊपर मे शेषनाग अपन फण पसारि देल, तें कियेक जलक लगों तक नहि भेलनि ॥10॥

(गीत—१३)

सएन = सुनबा मे। प्रतिहारे = द्वारपाल। तपनसुता = यमुना। निरवाहे = मग। तसु तनया = हुनक पुत्रीके। पयाने = प्रस्थान। देखिहि

---

५४ - अलोध। ५५ - उपर अहिपति। ५६ - पसरल। ५७ - कक्करहु

देवकि देखिहि खेला ।
मुदित मानस [तब] भेला ॥
पसरल सेहु परिमाटे ।
मुन्दित भेल कपाटे ॥
रोदन मन अनुमानी ।
जागल जामिनि जानी ॥
सुकवि गणक इह जाने ।
परिमत भेल धेयाने ॥

(अथ छन्दः)

धाए रक्षक पाट लाओल, सुनिअ प्रभु नृपराज ओ ।
देवकी गृह शिशुक रोदन सुनल अछि हमे आज ओ ॥11॥

(इति श्रुत्वा कंसासुरः सोल्लासम्[५८] उत्कवान् ।)

कंसासुरः—तहि सिद्ध नः समीहितम् । (इति[५९] सनम्भ्रमम् उत्थाय प्रकथितः ।)

(अथ छन्दः)

गमन-भर भूखण्ड[६०]-मण्डल, डोल भूधर गात ओ ।
भेल अति निर्घात चौदिस, होत उल्कापात ओ ॥

---

= देवीकृपा कन्या । पसरल = पूर्ववत् सब किछु पसरि गेल । मुन्दित = बन्द । कपाट = केवाड़ । जामिनि जानी = पहरूवार ॥

रक्षक दौड़ि राजद्वार पहुँचल ओ बजल—हे राजा ! देवकीक घर मे आइ हम बच्चाक कानब सुनल अछि ॥१०॥

(ई सुनि कंस उल्लासपूर्वक बजलाह ।)

कंस—तखन त हमरा लोकनिक अभीष्ट सिद्ध भए गेल । (हरबड़ाए ऊठि चलि देलनि ।)

(छन्द)

गमन-भर = चलबाक भार सँ । भूधर गात = पहाड़क अङ्ग । निर्घात

---

५८ - सोल्लासः उक्तं च तहि । ५९ - स सम्भ्रमोत्थाय । ६० - भूखण्ड मण्डल ।



मोद मत्त सुरारि अतिबल, रोषें जनु पथ धाए ओ ।
दर्प दर्पित कंस निर्दय, देवकी-गृह आए ओ ॥12॥

(देवकी सशम्भ्रमम् उत्थाय कंसासुरचरणे प्रणिपत्य गीतेन कथयति—)

(गीतम्—१४)

हे दादा ! न करह मोर निदाने ॥ध्रु०॥
जतन आस जत अङ्कुर अङ्कुरल
भेंगसह लाए पथाने ।
कि हमे कएल तोर[६१], जम सम तोहें मोर,
कंस ! तेजह अजाने ॥
सन्ततिहरन सहल[६२] के कर बल,
हमर अवस अवसाने ।
हमहि सताए कओन फल पओबह,
तनय देह वर दाने ॥
हित भए अरि सरि, काज करह करि,
निशुन-वचन अनुमाने ।
जेह लिखल रहत सकर फल पाबिअ,
सगर जगत एह जाने ॥

---

= भूकम्प । मोदमत्त = आनन्दें चूर । सुरारि = दैत्य कंस । रोषें = क्रोध सँ । दर्प दर्पित = घमण्ड सँ भरल ॥१२॥

(देवकी हरबड़ाए ऊठि कंसासुरक पएर पर खसि गीतक द्वारा कहैत छथि—)

गीत—१४

दादा = भाए । निदाने = दुर्गति । जतन आस = यत्न ओ आशा सँ । भेंगसह = फोड़लह । पथाने = पाथर पर । जम सम = यमराजक समान । सन्ततिहरन = सन्तानक हरण । अवस = निश्चय । अवसाने = अन्त, मृत्यु । अरि सरि

---

६१ - तोहर । ६२ - सहल के ।

जातक-शोक जेहन जननी कां,
ताहि करय अनुमाने ।
अपने अजों उनमाद भरल छह,
पूछि देखह घर आने ॥
माया मोह तोहें सभ तेजलह,
ठामहि रहत गुमाने ।
[६६]निरदय हिरदय उपज दया नहि,
सुकवि गणक इह भाने ॥
(तथापि कंसासुरः सक्रोधं प्रचलितः ।)

(अथ गीतम् – १५)

कंस गवन धरि गेला ।
सभ गन संकित भेला ॥
मह मातल अगेआनी ।
करतल छाएल भवानी ॥
[६७]झट अलोपल तेजि पानी ।
सुनल गगन निरवानी ॥
कि करह कंस गुमाने ।
भेल काल सें आने ॥
से अवतरलह आजे ।
जे करत तोहर इलाजे ॥

= शत्रुक सदृश । पिशुन = चुगला, दुष्ट । जातकशोक = पुत्रशोक । उनमाद = मानसिक असन्तुलन । हिरदय = हृदय में ।

(तेयो कंसासुर क्रोधपूर्वक चलि देलनि ।)

(गीत—१५)

अगेआनी = अज्ञानी । करतल = हाथ में । भवानी = यशोदाक पुत्रीरूप भगवतीके । झट अलोपल = तुरत गुप्त भेलीहि भगवती । तेजि पानी = कंसक

६६ - निरदए हृदए तेअओ दया नहि । ६७ - हट



मूढ़ विकल सुनि भेला ।
लाज लज्जित फिरि गेला ॥
अनुचित कएल विचारे ।
विहि सभों नहि परकारे ॥
गणक भनए मन लाई ।
नन्द—घर बाजु बधाई ॥

(नन्दालये यशोदा-किशोरमालोक्य गोप जना समुल्लसित-हृदया गीतेन कथयति—)

सोहर गीतम् – १६

पद—१ - हरि यदुनाथ यशोमति, अङ्कम लामोल रे ।
ललना, जनि पय पङ्कज परसमनि, निरधन पाओल रे ॥
छन्द— धन पाए निरधन, मगन मन, आनन्द उर[६८] न समाए ओ ।
कए हरख मन, गन्धर्व-गन, अवतरओ यदुकुल जाय ओ ॥
पद—२ - पय लए तोरित यशोमति, तनय नहाओल रे ।
ललना, सुनि नन्द दगरिनि सहित, आए गृह आएल रे ॥

हाथ सें छुटिके । गगन निरवानी = आकाशवाणी । इलाजे = प्रतीकार । मूढ़ = मूर्ख कंस । विहि सभो = । र सें ॥

(नन्दक घर मे यशोदाक पुत्रके देखि गोपीसभ उत्साह सें भरल हृदय-वाली गीतक द्वारा कहैत छथि – )

(सोहर गीत—१६)

पद—१ - यदुवंशक नाथ श्रीकृष्णके यशोदा कोर मे लेलनि, जेना घाट पर पङ्कज स्पर्शमणिके निर्धन व्यक्ति पावि गेल हो । उर = छाती मे । गन्धर्व = देवताक गायक ।
पद—२ - पय = दूध । तनय = पुत्र । दगरिनि = धर्मनि । यदुवंशक्षीरसमुद्र = यदुवंशकरूपी दूधक समुद्र सें ।

६८ - उर समाए ।

छन्द — गृह आए नन्द आनन्द भेल [६६]सुत, मोहि आनन्दकन्द ओ ।
यदुवंश-क्षीरसमुद्र सओं जनि, प्रकट भेलहु चन्द ओ ॥

पद—३ • नारछिनाछनि वगरिनि, पाओल सोहर रे ।
ललना, जुगे जुगे जीवओ यशोमति, बालक सोहर रे ॥

छन्द — सोहर यशोमति तनय अनुपम, देखिअ जदुकुलराज ओ ।
अति उथल भाग हुलास गोकुल, द्वार दुन्दुभि बाज ओ ॥

पद—४ • सुर नर मुनिगण हरखित, जय जय शबद भयो रे ।
ललना, कंसदलन कह नन्द-घर हरि अवतार लयो रे ॥

छन्द— अवतार लए हरि हरओ दारिद, दुःख शोक सन्ताप ओ ।
[६७]उतपन्न भए उद्योग कए प्रभु, चौदिग वलित प्रताप ओ ॥

पद—५ • घर घर स्वजिनि-गन मिलि, सोहर गाओल रे ।
ललना, हय गज मनि मानिक पट नट भट पाओल रे ॥

छन्द — पट पाए नट भट कोटि दीन्हा, लक्ष लक्ष सुवर्ण ओ ।
नन्दक याचक जगत दारिद, दारि कीन्हो धन्य ओ ॥

पद ६ • कोटि कोटि याचक-जन, [६९]आओर गुणिगण रे ।
ललना, शुभ शुभ शुभ धुनि सोहर सुकवि लाल भन रे ॥

छन्द — भन लाल कहए बेहाल गोकुल, भेल सकल मनोरथ ओ ।
तुअ तुङ्ग पुण्य प्रसाद बालक, भेल त्रिभुवन-नाथ ओ ॥

---

पद—३ • नारछिनाछनि = बच्चाक डोरीक नाल कटनिहारि । सोहर = टाका । अनुपम = अतुलनीय । दुन्दुभि = बाजा ॥

पद—४ • सुर नर = देवता ओ मनुष्य । शबद = शब्द । कंसदलन = कंसके मारनिहार । हरि = कृष्ण । दारिद = गरीबी । उतपन्न भए = जन्म लए । चौदिग वलित = चारू दिस चमकैत ॥

पद—५ • हय = घोड़ा । गज = हाथी । पट = वस्त्र । नट भट = नटुआ ओ वीर सभ । याचक = मङ्गनिहारक दरिद्रता के दूर करबा मे पट ।

पद—६ • बेहाल = आनन्दमग्न । तुङ्ग पुण्य प्रसाद = अतिशय पुण्यक कृपा सँ

---

६६ • ओ सुत । ६७ • ललना उतपन भए उद्योग कए चौदियावलित प्रताप ओ ।
६८ • ओ गुणिगण रे ।



(द्वितीय-सोहर-गीतम — १७)

[७१]निज जन गन शुभकारक, गोकुल-तारक रे ।
जनमल जगत उधारक, [७२]अरु प्रतिपालक रे ॥ललना ध्रु०॥
नन्द-घर उथल धाएए, सभ मिलि गाएए रे ।
व्रजरानी शुभ गाएए, लाखनि पाएए रे ॥
नट भट पट कर करखित, सुर[७३] नर हरखित रे ।
यदुकुल होअ फुल वरखित, अति आमरखित रे ॥
आज मन्दक पुर छाएए, चहुदिस[७४] जय जय रे ।
यशोमति कोर हरि[७५] राजए, दुन्दुभि बाजए रे ॥
हरि हेरि यशोमति मन जनि, पाओल परसमनि रे ।
सुकवि लाल कह [७६]रभसनि, निजपति देखबनि रे ॥

येनेन्द्रादि-समस्त-देवतगणाः सन्तोषिताः सर्वदा,
[७७]यो गोवर्द्धन-धारको ..... ।
..... .....

[७८]नन्दानन्द-विवर्धनो मधुरिपु[७९] र्देयाच्छिवं वोयसे ॥७७॥

---

(द्वितीय सोहर गीत- १७)

निजजन गन = अपना लोक सभक । तारक = उद्धार कएनिहार । भट = वीर । पट कर करखित = वस्त्रके हाथसँ धिचलनि(पओलनि)। सुर = देवता । आमरखित = आनन्दमग्न । राजए = शोभित होइत छथि । दुन्दुभि = बाजा । परसमनि = स्पर्शमणि (पारस) । रभसनि = शोभता सँ ॥

जे सदिखन इन्द्र आदि देवतालोकनिके सन्तुष्ट कएल, जे गोवर्द्धन पर्वत के धारण कएल,... .... — — ... .... ... — — — — — — — ... ... ... ... ... ... ... ... ... — ... ... — ... .... ...
नन्दगोपक आनन्दके बढ़ओनिहार, मधुदैत्यक शत्रु (भगवान् कृष्ण) अहाँलोकनिक अभ्युदयक हेतु कल्याण देथ ॥७७॥

---

६९ • निज गनजन अभकार गोकुल । ७० • उधार करिअ प्रतिपालक रे ।
७१ • सुर नर मुनि हरखित रे । ७२ • चहुदिस ब ब रे । ७३ • हरि राए । ७४ • रभस निज पति । ७५ • ओ । ७६ • (रिक्त स्थान नहि छोड़ल अछि ओ अगिला पंक्ति[७७] श्लोक कुशल गेल अछि ।) ७७ • रिपुच्छावाच्छिवं ।

(अमङ्गल-निवारणार्थं पूतना-शकट-यमार्जुन-केशी-काली-कुवल-यापीड़-चाणूर-मुष्टिक-प्रभृति-कंसवधोऽ**सन्दर्शितः ।)

रचितं जन्मरहस्यं गणकाधिपेन रामरसिकेन ।

भवतु सुखाय जनानां सदसि सदा नृत्यकालेषु ॥८॥

इति श्री झड़ुला प्रसिद्ध श्रीकान्त-विरचितं श्रीकृष्णजन्मरहस्यं समाप्तम् ॥

---

(अमङ्गल सँ बचएबाक हेतु पूतना, शकटासुर, यमलार्जुन, केशी, कालीनाग, कुवलयापीड़ हाथी, चाणूर पहलवान, मुष्टिक पहलवान इत्यादि सहित कंसक वध नहि देखाओल गेल ।)

महान् ज्योतिषी (गणकाधिप), भगवान् रामक रसिक एहि जन्मरहस्यक रचना कएल । ई कृति सभा मे नृत्यक समय मे सतत लोकसभक सुखक हेतु रहओ ॥८॥

इति श्रीझड़ुला प्रसिद्ध श्रीकान्तक बनाओल श्रीकृष्णजन्मरहस्य नाटक समाप्त भेल ॥

---

७८ • सभी संतुष्टिता ।

卐